श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

मई - तृतीय
अंक - 11

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2552
ई. सन् - 2026

Address Here

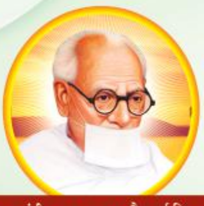

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

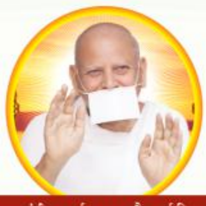

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष (1952 - 2026)

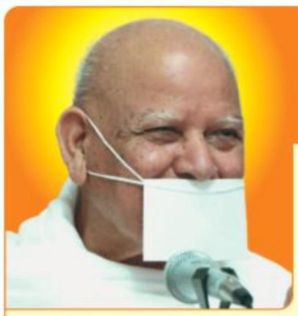

आत्मार्थियों का संघ श्रमण संघ

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

(गतांक से आगे)

कषाय : जब-जब साधक अपने स्वरूप का भान छोड़कर, देह को अपना मानकर विभाव दशा में जाता है, तब देह के निमित्त से जीव को क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय उत्पन्न होते हैं। जो आत्मार्थी है वह देह को पराया जानकर उसके निमित्त से विभाव में न जाकर भेद-ज्ञान के द्वारा दोनों का भेद कर सत्य में प्रवेश करता है वह अकषाय अवस्था में आता है, जिससे कर्म बन्धन रूक जाते हैं।

योग : जैन धर्म का पारिभाषिक शब्द है योग। योग तीन हैं, मन, वचन व काया, इनके वशीभूत होकर जीव अपनी शक्ति मन को देता है तो मन में विचार बनते हैं और इन विचारों को अपना मानकर वह क्रिया-प्रतिक्रिया करता है उससे वह साधक धर्म व शुक्ल ध्यान तक नहीं पहुँचता है और नवीन बन्धन बान्धता है। यहाँ पर आत्मार्थी साधक संयम के द्वारा मन, वचन, काया को गौण कर इन्हें वश में रखकर इनके पार आत्मा को आत्मा में स्थित करता है, वह आत्मार्थी साधक कर्म क्षय के मार्ग में आगे बढ़ता है। इन कर्मों के आगमन को आस्रव कहते हैं इन बन्धे कर्मों को क्षय करने के लिए जैन दर्शन में त्रिरत्न दिये हैं। सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र मोक्ष मार्ग है। अर्थात् जीव पर श्रद्धा कर जड़ और जीव का भेद ज्ञान कर, जीव को जीव में स्थित करना ये चारित्र है। जीवन में चारित्र अर्थात् चयन कर सभी कर्मों को क्षय करता है। धर्म व शुक्ल ध्यान से ये कर्म क्षय होते हैं।

जब जीव-जीव को अखण्ड रूप से निज में स्थित कर लेता है तो उसके अनंत काल के अज्ञान दशा में बन्धे सर्व कर्म क्षय हो जाते हैं। जीव को जीव में स्थित कर लेना जिन शासन में सर्वोच्च तप है। उस तप की आराधना से जीव अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख, अनंत शक्ति प्रकट कर केवली हो जाता है व आयुष्य पूर्ण होने पर शेष कर्म क्षय कर निर्वाण को प्राप्त कर लेता है।

अतः श्रमण संघ के चारों तीर्थ तत्व ज्ञान प्राप्त कर, उस पर श्रद्धा कर भेद ज्ञान के द्वारा सत्य को जाने व असत्य का त्याग करें। आत्मार्थी हेय का त्याग करें व उपादेय को ग्रहण करें तो जीवन सफल होगा।

अध्यक्षीय

जागरूक समाज, सुरक्षित अस्तित्व - जैन जनगणना में सहभागिता का महाअभियान

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय समाजबंधुओं,

किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति केवल उसकी परम्पराओं, आस्थाओं और सांस्कृतिक विरासत में ही नहीं, बल्कि उसकी संगठित उपस्थिति और सही आँकड़ों में भी निहित होती है। वर्तमान समय में जब विभिन्न स्तरों पर समाजों की स्थिति, आवश्यकताओं और अधिकारों का निर्धारण आँकड़ों के आधार पर किया जाता है, तब जैन जनगणना का विषय हम सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील बन जाता है।

हमारा जैन समाज अपनी आध्यात्मिक समृद्धि, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, सेवा और अहिंसा की जीवनदृष्टि के कारण विश्वभर में सम्मानित है, किन्तु यदि हमारी वास्तविक जनसंख्या का सही अंकन नहीं होगा, तो भविष्य में हमारी सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं का समुचित प्रतिनिधित्व प्रभावित हो सकता है। इसलिए यह केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि समाज के अस्तित्व, पहचान और भविष्य की सुरक्षा से जुड़ा हुआ विषय है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति जनगणना के प्रति जागरूक बने और स्वयं भी सही जानकारी दर्ज करवाएं तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करे। अनेक बार जानकारी के अभाव या लापरवाही के कारण जैन समाज के लोग अन्य श्रेणियों में दर्ज हो जाते हैं, जिससे हमारी वास्तविक संख्या प्रभावित होती है। यह स्थिति समाज के दीर्घकालिक हितों के लिए उचित नहीं कही जा सकती।

मैं जैन कॉन्फ्रेंस की समस्त प्रांतीय शाखाओं, महिला शाखाओं, युवा संगठनों, श्री संघों एवं समाज के प्रबुद्धजनों से विशेष आग्रह करता हूँ कि वे इसे एक सामाजिक जागरण अभियान के रूप में लें। घर-घर संपर्क, जन-जागरण, संगोष्ठियों, सोशल मीडिया और संवाद के माध्यम से समाज में यह संदेश पहुँचाया जाए कि प्रत्येक परिवार अपनी पहचान “जैन” के रूप में स्पष्ट रूप से अंकित करवाए। विशेष रूप से युवाशक्ति इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आज का युवा तकनीकी रूप से सक्षम, जागरूक और समाज के प्रति उत्तरदायी है। यदि युवा वर्ग इस विषय को गंभीरता से लेकर समाज को जागरूक करेगा, तो निश्चित रूप से व्यापक परिणाम सामने आएंगे। मातृशक्ति भी परिवारों में इस चेतना को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है।

यह केवल संख्या बढ़ाने का प्रयास नहीं, बल्कि अपनी परंपरा, संस्कृति और धार्मिक अस्मिता को सुरक्षित रखने का संकल्प है। एक संगठित और जागरूक समाज ही भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में समर्थ होता है।

आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि जैन जनगणना के इस महाअभियान में पूर्ण जागरूकता और सक्रियता के साथ सहभागी बनेंगे तथा समाज की सशक्त उपस्थिति सुनिश्चित करेंगे। यही समय की आवश्यकता है और यही आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारा दायित्व भी।

सम्पादकीय

प्रधानमंत्री की अपील के संदर्भ में जैन दर्शन का आत्मसंयम सिद्धांत और नेतृत्व का आदर्श

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने हैदराबाद में अपने संबोधन के दौरान देशवासियों से स्वर्ण खरीद में संयम, अनावश्यक विदेश यात्राओं से परहेज, ईंधन की बचत, सार्वजनिक परिवहन के उपयोग तथा ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में सक्रिय सहयोग का जो आह्वान किया है, वह केवल एक आर्थिक अपील नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जीवन में आत्मसंयम, उत्तरदायित्व और त्याग की संस्कृति को पुर्नस्मरण कराने वाला संदेश है।

वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ इस अपील को और अधिक प्रासंगिक बना देती हैं। पश्चिम एशिया में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते सैन्य तनाव ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। कच्चे तेल की कीमतों में अस्थिरता, समुद्री व्यापार मार्गों पर बढ़ता जोखिम, विदेशी मुद्रा पर दबाव तथा आयात-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं के लिए ऊर्जा लागत में संभावित वृद्धि जैसे संकट भारत सहित अनेक विकासशील देशों के सामने गंभीर आर्थिक चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसे समय में प्रधानमंत्री द्वारा ईंधन बचत, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और विदेशी मुद्रा संरक्षण की अपील केवल दूरदर्शी आर्थिक नीति नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता से जुड़ा हुआ एक आवश्यक नागरिक कर्त्तव्य भी है।

मेरे व्यक्तिगत दृष्टिकोण से यदि इस अपील को देखा जाए तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रधानमंत्री द्वारा व्यक्त ये विचार भारतीय अध्यात्म, विशेष रूप से जैन धर्म के मूल सिद्धांतों के अत्यंत निकट है। तीर्थंकर भगवान महावीर ने ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व मानवता को जो संदेश दिया-संयम, अपरिग्रह, आत्मानुशासन और आवश्यकताओं का सीमित उपभोग-वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। जैन दर्शन में श्रावकों के 12 अणुव्रतों कि अगर व्याख्या करें तो स्पष्ट होता है कि संसाधनों का अनावश्यक संचय, उपभोग की अंधी दौड़ और विलासिता अंततः व्यक्ति, समाज और राष्ट्र-तीनों को दुर्बल करती है। ऐसे में प्रधानमंत्री की यह अपील वस्तुतः उसी आत्मसंयम की आधुनिक राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अपील में प्रस्तुत ये सभी बिंदु जैन धर्म के अपरिग्रह और मर्यादित उपभोग के जीवन-दर्शन को राष्ट्रीय नीति और जनजीवन से जोड़ने का कार्य करते हैं। इस दृष्टि से प्रधानमंत्री के ये विचार न केवल देशहित में हैं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक मूल्यों को समकालीन संदर्भ में आगे बढ़ाने वाले भी हैं।

(शेष पृष्ठ 3 में)

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY POLUR
JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM • POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family • POLUR
Varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION • POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बेंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

गुणों का गुलदस्ता : श्रमण संघ

- युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

स्थानकवासी जैन श्रमण संघ का निर्माण संघटन की आधारशिला पर हुआ। संघटन में सम्मिलित प्रत्येक परंपरा तथा मुनिराजों-महासतियों के सत्व की सुरक्षा को लक्ष्य में रखकर संविधान का निर्माण हुआ। लोकतंत्र के मूल्यों का सम्यकृतया निर्वाह हो ऐसी व्यवस्था बनी। एकाधिकार नहीं जनाधिकार, दबावतंत्र नहीं स्वतंत्रता यह समाचारी का मूल उद्घोष रहा। यही कारण है कि विगत् सत्तर वर्षों से श्रमण संघ की विशिष्ट पहचान तथा साख है। इस स्वतंत्रता को स्थापित करने वाले, प्रदान करने वाले महापुरुषों ने स्वतंत्रता का अर्थ संघ के प्रति अपना निजी दायित्व जाना, माना और अपनाया, मूर्तरूप दिया। अपनी वाणी, व्यवहार, आचार में मर्यादाओं का पालन दबाव से नहीं स्वेच्छा से किया। 'वरं में अप्पा दंतो, संजमेण तवेणय'। मैं अपने आप को स्वयं नियंत्रित करूं, अपनी इच्छाओं का दमन करूं। भगवान महावीर के इस संदेश अनुशरण श्रमण संघ के प्रत्येक सदस्य ने किया। उनकी शुद्ध, निर्मल, सरल प्रज्ञा ने स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ, उद्देश्य को आत्मसात किया।

यह स्वतंत्रता साधक की शक्ति को उजागर करने वाली रही। लेखन-चिंतन-वितरण-प्रवचन-अध्ययन आदि में इस स्वतंत्रता ने साधकों को आगे बढ़ने की ऊर्जा दी। यही कारण है कि श्रमण संघ में विविधता के दर्शन होते हैं। आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. की अनेक आगमों पर विस्तारयुक्त व्याख्याएं, युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म.सा. द्वारा समग्र आगम बत्तीसी के सटीक विवेचन कार्य, आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. द्वारा आगम-दर्शन-कर्म सिद्धान्त, मनोविज्ञान, प्राचीन कथा साहित्य आदि पर विशाल ग्रन्थ संपदा का निर्माण यह श्रमण संघ में विद्यमान वातावरण के कारण ही संभव हुआ, हो रहा है। जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा. की साहित्य संपदा श्रमण संघ की बहुमूल्य धरोहर है। अनेक कवि, लेखक, साहित्यिक, मनीषी संत-सती जी श्रमण संघ के गौरव स्थान हैं। चिंतन के क्षेत्र में विविध विषयों पर मार्गदर्शन, तात्विक विषयों पर मौलिक लेखन, प्राचीन आधुनिक विद्या का समुचित समन्वय श्रमण संघ के अनेक सुधीजनों द्वारा समय-समय पर किया जाता है।

दक्षिण भारत में स्थित जैन परिवार एवं जैन समाज को धर्म क्षेत्र में बनाए रखने में तथा आगे बढ़ाने में श्रमण संघ के संत-सतीवृंद का विशेष पुरुषार्थ एवं उपकार रहा है। अनार्य क्षेत्र अनेक विघ्न-बाधाएँ, ठहरने, आहार-पानी की उपलब्धता की अनेक असुविधाएँ, असाता की परवाह किए बिना उन प्रान्तों में रहने वाली श्रद्धालु जनता को धर्म मार्ग प्रदान करने का महत्कार्य श्रमण संघ के द्वारा हुआ है। जिस समय अन्य स्वतंत्र सम्प्रदाय के संत-सती हमारे संयम में दोष लगेगा, संघ में शिथिलाचार बढ़ेगा आदि अनेक कारण देकर जिन क्षेत्रों में विचरण से कतराते थे, उन क्षेत्रों में जाकर चातुर्मास, शेषकाल प्रवास के लिए जाने का कार्य केवल श्रमण संघ प्रारंभ किया। उस विचरण से संत-सतीवृंद के प्रति श्रद्धाभाव की अभिवृद्धि हुई। उन क्षेत्रों में विचरण से नई पीढ़ी को, जैनेत्तर जनता को संतों का, धर्म का परिचय हुआ। विशाल तथा उदार मतवादी संघ होने से उन्होंने सभी परंपराओं के चारित्र आत्माओं का भावपूर्ण स्वागत किया, सम्मान किया।

श्रमण संघ की विविधता के कारण भिन्न-भिन्न परंपराओं से प्राप्त पद्धतियों के कारण प्रवचन में भी विविधता, विशेषता है। अन्य अनेक स्वतंत्र परंपराओं में प्रवचन अधिकांशतः साधुचर्या आदि से संबंधित पारंपरिक विषयों पर ही होते है। श्रमण संघ के प्रवचनों में भारतीय संत साहित्य के अनेक उदाहरण जैन-जैनेत्तर जनता को जैन धर्म तथा संतों के प्रति आस्था वृद्धिंगत कराते है। अनेकों प्रवचन-प्रभावक मुनिराज तथा महासाध्वी जी ने अपनी प्रतिभा एवं वाणी की मधुरता से जिनशासन की महती प्रभावना की है। अपने ग्रामानुग्राम विचरण द्वारा प्राप्त संस्कार तथा प्रस्तुति की विशेषता ने उन्हें यह शक्ति प्रदान की। प्रवचन कला को विकसित विस्तारित किया। उसे नवीनतम विषयों द्वारा अधावत किया गया है। इस प्रकार की विविधता जिनवाणी तथा धर्म के प्रति अनेक श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है।

प्राकृत-संस्कृत आदि आगम, प्राचीन ग्रन्थों की मूल भाषा तथा हिन्दी, अंग्रेजी आदि प्रचलित जनभाषा के साहित्य का अध्ययन अनेक परंपरा के संघाड़ों में विस्तृत रूप से चला। दर्शन शास्त्र के अध्ययन में जैन दर्शन तथा अन्य दर्शनों के व्यापक बोध का अवसर प्राप्त हुआ। स्व-समय, पर-समय विशारद निपुण बनने में इसका उपयोग हुआ। जैनेत्तर सिद्धांतों, मान्यताओं के साथ ही अन्य दर्शन के विषय में प्रचलित भ्रांतियों का निराकरण हो जाता है। आज अनेक परंपराएँ एकान्त पक्षीय आग्रह के कारण पारस्परिक विद्वेष के निमित्त बन जाते हैं। राग-द्वेष से ग्रस्त होते हैं, उससे बचाव होता है। दृष्टि विशुद्ध बनती है। आज अनेक स्वतंत्र परंपरा के अनुयायी अपने पक्ष के स्वीकार सम्मान समर्थन एवं अन्य पक्ष के प्रति अनादर, तिरस्कार, विरोध को भावों की दृढ़ता मानते है, जिससे वे अधिक मिथ्यात्व अंधकार में डूब जाते हैं। व्यापक अध्ययन ने श्रमण संघ में उदारता को स्थान दिया है। अपने धर्म, परम्परा के प्रति आस्था-समर्पण का अर्थ औरों को तुच्छ मानना नहीं, यह समझ विकसित की।

श्रमण संघ के चारित्रात्माओं की काव्य प्रतिभा अतुलनीय रही। भाव-भाषा-शैली की उत्कृष्टता से जैन दर्शन के सिद्धांतों को, जीवन के शाश्वत मूल्यों को सरलता से प्रस्तुत किया गया है। अनेक स्तवन, गीत, भजन को जनमानस को भक्ति से सराबोर कर देते हैं। अंतर्हृदय को झंकृत कर देते हैं। इन रचनाओं का श्रेय हमारी उन महान प्रतिभाओं को संप्राप्त है।

हमारा दायित्व है कि हम उन विशेषताओं को संरक्षित रखे, संवर्धित करें। आधुनिकता तथा सुविधाओं के व्यामोह में हम अपनी विशेषताओं से वंचित न हो जाये। कोरोना के कारण ऑनलाईन स्कूली शिक्षा ने जैसे आज की पीढ़ी की शिक्षा में एक भूचाल लाया है। लिखना-पढ़ना बोझ सा लगने लगा है। लेखन-वाचन से होने वाले सामाजिक विकास में अवरोध उत्पन्न किया है। हमें भी अपनी प्रतिभा का सर्वांगिण उपयोग करके हमारे उपकारी महापुरुषों की उस दिव्य परम्परा को आगे बढ़ाना है। हमारे लिए प्रदत्त श्रमण संघ के स्वतंत्र अधिष्ठान का उपयोग शक्ति जागरण-शक्ति विकास में करना है। स्वतंत्रता यदि स्वच्छंदता रूप ले तो वह शक्ति ह्रास एवं शक्ति विनाश का कारण बन सकती है। लेखन-चिंतन-वाचन-अध्ययन आदि के स्वातंत्र्य को सम्यक् रूपेण आत्मसात करने का संकल्प श्रमण संघ की गरिमा को वास्तव में अक्षुण्ण रख सकता है। गुणों का गुलदस्ता महकता रह सकता है।

सादर निवेदन : नवतपा के दिनों में विचरण से बचें पूज्य साधु साध्वीवृंद

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में जब सूर्य रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करता है, तब अगले 9 दिन तक सूर्य की किरणे पृथ्वी पर काफी सीधी पड़ती है, जिसकी वजह से साल के इन 9 दिनों को साल का सबसे गर्म समय माना जाता है। इस वर्ष नवतपा 24 मई 2026 से 1 जून 2026 तक है। इन दिनों मे संत/सतियाँजी म. हो सके तो एक जगह स्थिर रहे, विहार ना करे। जहाँ भी विराजे पानी की उपलब्धता देखकर विराजे। संत सतियाँ जी समाज की धरोहर है, हमें उन्हें इस बात से अवगत करते हुए कुछ दिनों के लिए विचरण न किए जाने की विनती करनी चाहिए। गत वर्ष में नवतपा के दौरान कई संतों महापुरुषों के गर्मी के कारण देवलोक हुए थे। हमारे थोड़े से प्रयास से महापुरुषों को साता उपज सकती है।

- निवेदक : जैन कॉन्फ्रेंस परिवार

कथा-कहानी | योगिराज की कहानियाँ - प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

तन्मय भाव

एक स्त्री थी! उसका पति विदेश चला गया था। वह पति के विरह से बहुत दुखी हुई। खाना-पीना भूल गई। उसकी आँखों में मन में बस प्रियतम की छवि ऐसे अंकित हुई जैसे बिन बोलती मूर्ति अपने आप कभी नहीं बोलती पर वह स्त्री थी जो प्रियतम को बुलवा लेने पर तुल गई थी। प्रियतम की छवि के अतिरिक्त दूसरे किसी रूप की परछाई तक नहीं पड़ी थी उस पर। खाना-पीना तक छोड़ दिया तो सूखकर अस्थि-पंजर मात्र हो चली थी।

एक दिन अचानक उसे पता चला कि उसका पति परदेश से लौट आया है पर बाहर बाग में टिका हुआ है। स्त्री को यह सुनकर अपार हर्ष का अनुभव हुआ। हर्ष के अतिरेक में भर वह पति से मिलने के लिए चल पड़ी। जब चली तब उसके मन में पति की छवि समाई हुई थी। उसे लगा, पति मिल ही जाएँगे। भागी चली जा रही थी।

आम रास्ता था। बादशाह का वहाँ से गुजरना हो रहा था। इबादत का वक्त हो गया यह सोचकर जहाँ जो जैसे था एक कपड़ा बिछाया और नमाज पढ़ने लग गया। रास्ता हो या जंगल! मकान हो या बियाबान। जब वक्त हो ही गया है इबादत का तो मस्जिद कहाँ तलाशता? वहीं नमाज पढ़ने लगा। औरत चली जा रही थी। जब उसने इतना लम्बा समय प्रियतम छवि के अतिरिक्त दूसरी छवि का प्रतिबिंब तक मन के आइने पर न पड़ने दिया तो बादशाह को वह क्यों व्यवधान मानने लगी। वह भी उस समय जब बिछुड़े हुए पति से मिलने जा रही हो।

स्त्री ने बादशाह के इबादत करने के लिए बिछाये कपड़े पर ही पाँव रखा और आगे निकल गई। बादशाह को तुरन्त पता चल गया। वह स्त्री को अपनी ओर आते देखकर ही यह अनुमान लगा चुका था कि यह कपड़े के ऊपर से गुजर जाएगी।

औरत आगे निकल गई। बादशाह गुस्से से भर गया। अभी नमाज पूरी न हुई थी। उसने चुप रहना ही ठीक समझा। इबादत तो एक प्रक्रिया थी शब्दों की, पूरी हो गई तो वह इंतजार में रहा कि औरत वापस तो लौटेगी, तभी समझूँगा उसे। उसने ऐसी गुस्ताखी कैसे की?

स्त्री पति से मिलकर लौटी तो बादशाह ने उसकी खबर ली। कहा तुझे इतना भी पता नहीं चला कि मैं यहाँ नमाज पढ़ रहा था। मेरे आसन पर पैर रख कर आगे बढ़ जाने की तुझ में हिम्मत कैसे हुई?

स्त्री ने कहा - जहाँपनाह, मैं तो हिम्मत के बगैर ही चली जा रही थी। मुझे मेरा पति दिख रहा था बाकी सब कुछ नष्ट हो गया था। मैं अपने पति में इतनी एकात्म हो गई थी कि आपका दिखाई देना बंद हो गया था। परन्तु बादशाह सलामत आप भी तो खुदा की याद में खोए हुए थे। आपको कैसे पता चल गया कि मेरे आसन पर से एक औरत गुजर कर चली गई है?

बादशाह के पास औरत के सवाल का जवाब देने को कुछ बचा नहीं था। वह चुप यह सोचता रह गया - औरत का कहना ठीक है। मैं खुदा को याद कर रहा था तब इतनी बाहरी निगाह रख रहा था। यह तो अपने पति से मिलने जा रही थी तब ही सब कुछ भूली हुई थी। मैं परवरदिगार की याद कर रहा था, उस वक्त तो औरत का गुजर जाना तक मेरे ख्याल में नहीं आना चाहिए था। सच्ची तन्मयता मुझ में अभी पैदा ही नहीं हुई है। **'पढ़ कुरान कोरे भये, नहिं राचा रहमान।'** अगर मैं रहमान को सच्चे दिल से याद करता तो औरत का गुजर जाना मेरे लिए बेमानी हो जाता। कुरान पढ़कर भी मैं कोरा ही रह गया।

गन्ने को पशु भी खाता है और मनुष्य भी खाता है किन्तु अन्तर इतना है कि पशु छिलके भी निगल जाता है, जबकि मनुष्य सिर्फ रस पीता है। जो बुराई-भलाई का विवेक किये बिना सब कुछ लेता है, वह मानव देह में पशु है।

गुरुदेव जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म. का प्रभाव : डाकुओ का आत्म समर्पण

प्रस्तुति : विजय कुमार लोढ़ा जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

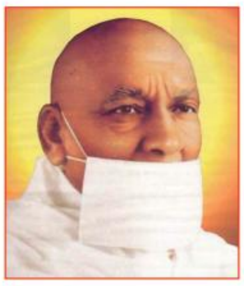

एक बार जैन दिवाकरजी महाराज ग्रामानुग्राम धर्मोपदेश देते हुए चितौड़गढ़ (राजस्थान) जिला के अन्तर्गत डूंगला-मंगलवाड मार्ग पर स्थित बिलोदा गाँव में बिराज रहे थे। बिलोदा एक किसानी गाँव है। गाँव का मुखिया उदा पटेल एक इज्जतदार काफी सम्पन्न व लाखों की सम्पति का मालिक था। घर में दो शादियाँ होने के कारण उसने काफी सोने-चाँदी के जेवर खरीद रखे थे। पटेल की सम्पन्नता की बात व शादी में खरीदे जेवर की बात उस समय के उस इलाके के प्रसिद्ध डाकू कालु व लालु ने सुनी। उन्होने निश्चय किया कि उदा पटेल के यहाँ डाका डाला जाय कारतूस और बन्दुकों से लैस होकर दोनों आ धमके ओर घोड़ों को एक तरफ खड़ा करके पेड़ की आड़ में बैठ गये।

कालू और लालु देखते है कि लोग लुगाइ के झुण्ड के झुण्ड बिलोदा की ओर जा रहे हैं, इतनी भीड़ का बिलोदा जाने का कारण जानने के लिए वे रास्तें के बीच में आए और कालू ने पूंछा तुम लोग कहाँ जा रहे हो? भरा बदन, मुँह बांधे हाथ में दोनाली बन्दुक लिए हुए डरावनी शक्ल देखकर लोग डर गये व डरे सहमें लोगों में से एक व्यक्ति ने कहा कि हमारे गुरुदेव जैन दिवाकर श्री चौथमल जी महाराज बिलोदा आए हुए हैं और हम सब उनके दर्शन करने जा रहे हैं।

चौथमल जी महाराज का नाम सुनते ही दोनों डाकु स्तम्भित हो गये व एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे तथा इशारों ही इशारों में निर्णय कर लोगों से बोले तुम हमें नहीं जानते हम इलाके के मशहूर डाकू लालू व कालू हैं और उदा पटेल के यहाँ डाका डालने आए थे। पर मालूम पड़ा कि चौथमल जी महाराज यहाँ विराज रहे हैं तो जहाँ चौथमल जी महाराज होते हैं हम डाका नहीं डाल सकते ना तो हमारे पांव उठते हैं ना हिम्मत होती है।

डाकुओं ने लोगों को कहा कि तुम उदा पटेल को जाकर कहना कि लालू व कालू तुम्हारे यहाँ डाका डालने आये थे पर चौथमल जी महाराज गाँव में विराज रहे हैं इसलिए वापस जा रहे हैं। ऐसा कहते ही दोनो डाकू जिधर से आये थे घोड़ों पर सवार होकर रवाना हो गये। कुछ वर्षों बाद विचरते हुए जैन दिवाकर जी महाराज डुंगला पधारे। व्याख्यान की समाप्ति पर यह दोनों डाकु मुनिश्री के समक्ष खड़े होकर अब तक किये गये पापों/दुष्कार्यों के लिए प्रायश्चित कर प्रतिज्ञा ली कि अब वो किसी प्रकार का अपराध नहीं करेंगें। गुरुदेव के नाम सुनने मात्र से लोग कितने अभिभूत होते थे और वाणी जो सुन लेता वह सदा के लिये उनका हो जाता।

अच्छा व्यवहार, चेहरे पर मुस्कान

- देवेंद्र गादिया जैन, इंदौर (मध्य प्रदेश)

एक दिन एक व्यक्ति ऑटो से रेलवे स्टेशन जा रहा था। ऑटो वाला बड़े आराम से ऑटो चला रहा था कि अचानक ही एक कार पार्किंग से निकलकर रोड पर आ गयी। ऑटो चालक ने तेजी से ब्रेक लगाया और कार, ऑटो से टकराते टकराते बची। कार चालक गुस्से में कार से निकला और ऑटो वाले को ही भला-बुरा कहने लगा जबकि गलती कार-चालक की खुद की थी।

ऑटो वाले ने कार वाले की बातों पर गुस्सा नहीं किया और उल्टा मुस्कराते हुए आगे बढ़ गया। ऑटो में बैठे व्यक्ति को कार वाले की हरकत पर गुस्सा आ रहा था और उसने ऑटो वाले से पूछा तुमने उस कार वाले को बिना कुछ कहे ऐसे ही क्यों जाने दिया। उसने तुम्हें भला बुरा कहा जबकि गलती तो उसकी थी। हमारी किस्मत अच्छी है, नहीं तो उसकी वजह से हम अभी अस्पताल में होते।

ऑटो वाले ने कहा साहब बहुत से लोग गार्बेज ट्रक (कूड़े का ट्रक) की तरह होते है। वे बहुत सारा कूड़ा अपने दिमाग में भरे हुए चलते है-हमेशा निराशा, क्रोध और चिंता से भरे हुए नकारात्मक रवैया अपनाते है। जब उनके दिमाग में निराशा रूपी कूड़ा बहुत अधिक हो जाता है तो वे अपना बोझ हल्का करने के लिए इसे दूसरों पर फेंकने का मौका ढूंढने लगते है।

इसलिए मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूँ और उन्हें दूर से ही मुस्कराकर अलविदा कह देता हूँ क्योंकि अगर उन जैसे लोगों द्वारा गिराया हुआ कूड़ा अगर मैंने स्वीकार कर लिया तो मैं भी एक गार्बेज ट्रक बन जाऊँगा और अपने साथ-साथ आस-पास के लोगों पर भी निराशा रूपी कूड़ा गिराता रहूँगा।

जिंदगी बहुत छोटी है जो हमसे अच्छा व्यवहार करते है उन्हें धन्यवाद कहो और जो हमसे अच्छा व्यवहार नहीं करते, उन्हें मुस्कुराकर माफ कर दो। वैसे ये काम है मुश्किल, किन्तु असम्भव नही।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

किन्तु इतिहास यह भी बताता है कि समाज केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि नेतृत्व के व्यक्तिगत उदाहरणों से अधिक प्रेरित होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का यह विश्वास था कि 'स्वयं अनुशासित शासन ही समाज में अनुशासन की प्रेरणा देता है।' गांधीजी ने जो कहा, उसे पहले अपने जीवन में उतारा, तभी वह जन-आंदोलन बन सका। आज यदि देश के प्रधानमंत्री नागरिकों से संयम, बचत और सादगी की अपेक्षा कर रहे हैं, तो यह समय नेतृत्व द्वारा भी कुछ बड़े और प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करने का है। यदि आगामी एक वर्ष तक सरकारी आयोजनों, राजनीतिक रैलियों, अत्यधिक प्रचार-प्रसार, भव्य मंचों और अनावश्यक विदेशी दौरों को अत्यंत सीमित, उद्देश्यपूर्ण और सादगीपूर्ण बनाया जाए, यदि भारत के सर्वाधिक शक्ति संपन्न राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी सहित अन्य सभी राजनीतिक दल संसाधनों के संयमित उपयोग का सार्वजनिक संकल्प लें-तो यह संदेश करोड़ों नागरिकों तक कहीं अधिक प्रभावी रूप में पहुँचेगा।

जैन दर्शन कहता है-'उपदेश से अधिक प्रभाव आचरण का होता है।' जब नेतृत्व स्वयं सीमित साधनों, सादगी और आत्मानुशासन का उदाहरण प्रस्तुत करता है, तभी समाज उसे हृदय से स्वीकार करता है।

आज भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ आर्थिक शक्ति, ऊर्जा आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक मूल्यों-तीनों का संगम आवश्यक है। प्रधानमंत्री जी की अपील स्वागत योग्य है, अब आवश्यकता इस बात की है कि यह संदेश केवल जनता तक सीमित न रहे, बल्कि शासन, राजनीति और नेतृत्व के प्रत्येक स्तर पर आचरण का हिस्सा बने। यही भारत की आत्मा है, यही जैन धर्म का संदेश है और यही सच्चे राष्ट्रनिर्माण का मार्ग भी।

प्रमाद से प्रमोद
सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 18

सूक्ष्म अहंकार की पहचान (गहन विस्तार)

स्थूल अहंकार को पहचानना सरल है। घमंड, कठोरता, तुलना, श्रेष्ठता-ये स्पष्ट संकेत हैं। परंतु सूक्ष्म अहंकार अत्यंत महीन होता है। वह विनम्रता के पीछे भी छिप सकता है। सेवा के भीतर भी। मौन के भीतर भी। साधना के भीतर भी। जब तक सूक्ष्म अहंकार को न देखा जाए, प्रमाद पूरी तरह समाप्त नहीं होता।

1. स्थूल और सूक्ष्म अहंकार में अंतर : स्थूल अहंकार कहता है-"मैं श्रेष्ठ हूँ।", सूक्ष्म अहंकार कहता है-"मैं विनम्र हूँ।", स्थूल अहंकार तुलना करता है। सूक्ष्म अहंकार तुलना नहीं करता, पर भीतर स्वयं को अलग अनुभव करता है। यह अलगाव अत्यंत सूक्ष्म है।

2. सेवा में छिपा अहंकार : जब व्यक्ति सेवा करता है, तो वह पुण्य कर्म है। पर यदि भीतर यह भाव उठे-"मैंने इतना किया।", "मुझे समझा नहीं गया।", "मेरी कद्र नहीं हुई।", तो समझना चाहिए कि सेवा में सूक्ष्म अहंकार जुड़ गया था। जहाँ अपेक्षा है, वहाँ पहचान जुड़ी है।

3. मौन में छिपा अहंकार : कभी व्यक्ति मौन रहता है। पर भीतर यह भाव हो सकता है-"मैं दूसरों से अधिक शांत हूँ।", "मैं प्रतिक्रिया नहीं देता।", "मैं अधिक परिपक्व हूँ।", यह मौन भी अहंकार का रूप हो सकता है। सच्चा मौन स्वयं की घोषणा नहीं करता।

4. त्याग का सूक्ष्म स्वरूप : त्याग भी अहंकार का आधार बन सकता है। "मैंने इतना त्याग किया।", "मैंने सब छोड़ दिया।", "मैं अलग हूँ।", त्याग यदि पहचान बन जाए, तो वह त्याग नहीं-सूक्ष्म अहंकार है।

5. ज्ञाता की परत : सूक्ष्म अहंकार का सबसे महीन रूप है-आध्यात्मिक श्रेष्ठता। व्यक्ति भीतर कह सकता है-"मैं समझ चुका हूँ।", "मैं अब अलग स्तर पर हूँ।", "मैंने अहंकार छोड़ दिया।", अहंकार छोड़ने का दावा भी अहंकार का ही रूप हो सकता है।

6. शरीर में सूक्ष्म कठोरता : सूक्ष्म अहंकार की पहचान शरीर में भी की जा सकती है। हल्की छाती की तनी हुई अवस्था। गर्दन की हल्की कठोरता। श्वास की नियंत्रित सजगता। यदि सजगता सहज न होकर प्रयासपूर्ण हो, तो संभव है कि अहंकार उसे पकड़े हुए है।

7. प्रतिक्रिया की जाँच : सूक्ष्म अहंकार की पहचान प्रतिक्रिया से होती है। यदि कोई आपकी समझ पर प्रश्न करें और भीतर हल्की असुविधा उठे, तो देखें। यदि कोई आपकी साधना को न माने और भीतर हल्की बेचैनी हो, तो देखें। यह देखना सूक्ष्म परतें खोल देता है।

8. स्वयं को पकड़ना : सूक्ष्म अहंकार को पकड़ने का एक तरीका है-स्वयं को "पकड़ते" हुए देखना। जब मन कहे-"मैं अब बदल गया हूँ।", "मैं अब वैसा नहीं हूँ।", तो रुकें। देखें-क्या यह घोषणा आवश्यक है? या भीतर कोई पहचान जन्म ले रही है?

9. नरमी की साधना : सूक्ष्म अहंकार कठोरता में जीवित रहता है। नरमी उसे पिघलाती है। नरमी का अर्थ है-गलती स्वीकार करना। सीखने के लिए खुले रहना। अनुभव को पकड़कर न बैठना। स्वयं को विशेष न मानना। यह नरमी सजगता को गहरा करती है।

10. अंतिम स्पष्टता : सूक्ष्म अहंकार अत्यंत महीन है। वह सीधे नहीं दिखता। वह भावना, पहचान और अनुभव के पीछे छिपता है। जब तक उसे देखा न जाए, प्रमाद बना रहता है। जब उसे देख लिया जाए, तो वह धीरे-धीरे पिघलने लगता है और वहीं से अगला चरण प्रारंभ होता है-मन से शरीर तक ऊर्जा के प्रवाह को समझना।

❁❁❁

(क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला

हर्बर्ट वॉरेन : बौद्ध अध्ययन की यात्रा में जैन धर्म के वैश्विक प्रवक्ता बने एक पाश्चात्य विद्वान

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

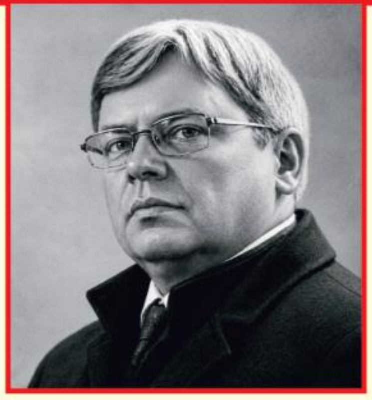

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब पाश्चात्य जगत भारतीय धर्मों, दर्शन और आध्यात्मिक परंपराओं को गंभीरता से समझने का प्रयास कर रहा था, उस समय कुछ विद्वानों ने अपने निष्पक्ष अनुसंधान के माध्यम से भारत की दार्शनिक विरासत को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐसे विद्वानों में हर्बर्ट वॉरेन का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यद्यपि उनकी मूल रुचि प्रारंभ में बौद्ध अध्ययन में थी, किंतु सत्य, आत्मा और नैतिक अनुशासन की भारतीय अवधारणाओं का गहन अध्ययन करते हुए उनका परिचय जैन दर्शन से हुआ, जिसने उनके चिंतन को नई दिशा प्रदान की।

हॉर्बर्ट वॉरेन ने प्रारंभिक अध्ययन में पालि साहित्य, बौद्ध सूत्रों और प्राचीन भारतीय दार्शनिक परंपराओं का गंभीर अनुशीलन किया। इस अध्ययन के दौरान उन्होंने अनुभव किया कि भारतीय चिंतनधारा को समग्रता में समझे बिना किसी एक परंपरा का निष्पक्ष मूल्यांकन संभव नहीं है। इसी बौद्धिक जिज्ञासा ने उन्हें जैन आगम, जैन तत्त्वमीमांसा तथा जैन नैतिक दर्शन की ओर प्रेरित किया।

जैन दर्शन के अध्ययन के दौरान वॉरेन विशेष रूप से इस तथ्य से प्रभावित हुए कि जैन परंपरा में अहिंसा केवल सामाजिक नैतिकता का सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन का केंद्रीय तत्व है। उन्होंने पाया कि जैन मत में अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा से विरति नहीं, बल्कि विचार, वाणी और भाव-तीनों स्तरों पर संयम और करुणा का विकास है। यही व्यापक दृष्टि उन्हें जैन धर्म की ओर आकृष्ट करती चली गई।

हॉर्बर्ट वॉरेन के अध्ययन का सबसे उल्लेखनीय परिणाम उनकी चर्चित कृति Jainism : Not Atheism but Theism के रूप में सामने आया। इस ग्रंथ ने पाश्चात्य जगत में जैन धर्म के संबंध में प्रचलित अनेक भ्रांतियों का तार्किक निराकरण किया। वॉरेन ने अपने शोध में स्पष्ट किया कि जैन धर्म को केवल निरीश्वरवादी परंपरा के रूप में देखना उसकी दार्शनिक गहराई के साथ न्याय नहीं है वास्तव में यह आत्मा की अनंत संभावनाओं, कर्म-सिद्धांत और आत्मोन्नति पर आधारित एक अत्यंत विकसित दार्शनिक प्रणाली है।

उन्होंने जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों-जीव, अजीव, कर्म, बंध, मोक्ष तथा पुद्गल का विश्लेषण करते हुए यह दिखाया कि जैन चिंतन केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि अस्तित्व, चेतना और ब्रह्मांड की संरचना पर आधारित एक तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। विशेषतः पुद्गल और कर्म के सिद्धांतों की उनकी व्याख्या ने पश्चिमी पाठकों को भारतीय दार्शनिक चिंतन की सूक्ष्मता से परिचित कराया।

वॉरेन ने जैन धर्म के रत्नत्रय सिद्धांत की तुलना बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग से करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि जैन साधना अपने अनुशासन, आत्मसंयम और तप की दृष्टि से अत्यंत विशिष्ट और कठोर साधना-पद्धति का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि जहाँ बौद्ध दर्शन क्षणभंगुरता की अवधारणा को प्रमुखता देता है, वहीं जैन दर्शन द्रव्य की नित्यता और परिवर्तनशील पर्यायों के सिद्धांत के माध्यम से अस्तित्व का अधिक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

उस समय पश्चिमी बौद्धिक जगत में यह भ्रांति प्रचलित थी कि जैन धर्म संभवतः बौद्ध धर्म की एक शाखा है। हॉर्बर्ट वॉरेन के शोध ने इस भ्रम को दूर करते हुए यह स्थापित किया कि जैन धर्म एक स्वतंत्र, अत्यंत प्राचीन और सुव्यवस्थित दार्शनिक-धार्मिक परंपरा है, जिसकी वैचारिक जड़ें भारतीय सभ्यता के अत्यंत प्राचीन स्रोतों में निहित हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हॉर्बर्ट वॉरेन ने बौद्ध धर्म के अध्ययन से प्रारंभ हुई अपनी बौद्धिक यात्रा को जैन दर्शन की गहराइयों तक पहुँचाया और इस प्रक्रिया में वे अनायास ही जैन धर्म के एक प्रभावशाली वैश्विक प्रवक्ता बन गए। उनके शोध ने न केवल जैन दर्शन को पश्चिमी अकादमिक जगत में नई पहचान दिलाई, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं के तुलनात्मक अध्ययन को भी नई दिशा प्रदान की।

संदर्भ :
* Jainism: Not Atheism but Theism
* Jainworld?
* Jainpedia?
* वीरचंद राघवजी गांधी से संबंधित ऐतिहासिक पत्राचार एवं समकालीन

यूनेस्को की विश्व स्मृति सूची में दर्ज जैन धरोहर :
'शांतिनाथ चरित्र' भारत की गौरवशाली पांडुलिपि

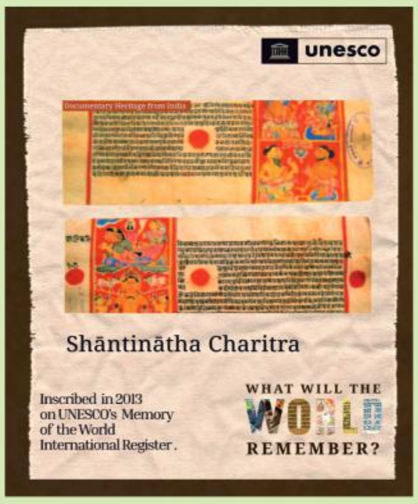

भारतीय जैन साहित्य, कला और आध्यात्मिक विरासत का एक अद्भुत प्रतीक "शांतिनाथ चरित्र" आज विश्व पटल पर भारत की सांस्कृतिक पहचान को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर रहा है। चौदहवीं शताब्दी में आचार्य अजीतप्रभ सुरि द्वारा सन् 1396 ईस्वी में संस्कृत भाषा एवं देवनागरी लिपि में रचित यह दुर्लभ जैन पांडुलिपि वर्ष 2013 में UNESCO की "Memory of the World International Register" में सम्मिलित की गई।

यह अमूल्य ग्रंथ जैन धर्म के 16वें तीर्थंकर शांतिनाथ के जीवन, तप, करुणा, अहिंसा और लोक-कल्याण के संदेश को प्रस्तुत करता है। हस्तनिर्मित कागज पर तैयार इस पांडुलिपि में 156 फोलियो तथा 10 दुर्लभ लघुचित्र अंकित हैं, जिन्हें जैन लघुचित्र कला के सबसे प्राचीन और उत्कृष्ट उदाहरणों में माना जाता है। इन चित्रों में गुजरात की पारंपरिक जैन चित्रकला शैली की झलक मिलती है।

विशेषज्ञों के अनुसार शांतिनाथ चरित्र केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानवता को अहिंसा, मैत्री, करुणा और पर्यावरण संरक्षण का सार्वभौमिक संदेश देने वाला दस्तावेज है। इसी ऐतिहासिक, बौद्धिक और कलात्मक महत्व को देखते हुए यूनेस्को ने इसे विश्व की अमूल्य दस्तावेजी धरोहर के रूप में मान्यता प्रदान की।

यह दुर्लभ पांडुलिपि वर्तमान में लाल भाई दलपत भाई रिसर्च इंस्टीट्यूट, अहमदाबाद में सुरक्षित है, जहाँ यह भारतीय जैन साहित्य और कला की समृद्ध परंपरा की साक्षी बनी हुई है।

जैन समाज के लिए यह केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि विश्व मंच पर भारतीय श्रमण संस्कृति की अमिट पहचान है।

दिल्ली प्रांतीय महिला शाखा द्वारा वृद्धाश्रम में भोजन वितरण

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन के मार्गदर्शन में दिनांक 10 मई को मातृ दिवस के अवसर पर पश्चिम विहार में स्थित सेवा धाम वृद्धाश्रम में प्रांतीय महिला शाखा की बहनों द्वारा भोजन सेवा का लाभ लिया गया। दिल्ली प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन, श्रीमती नीता जैन, श्रीमती कुसुम जैन, श्रीमती कनिका जैन, श्रीमती रेखा जैन, श्रीमती सुदेश जैन, श्रीमती शिखा जैन, श्रीमती राजरानी जैन आदि ने इस मौके पर अपनी सेवाएं प्रदान की। प्रेषक : सीमा जैन

शांति और स्थिरता प्राप्ति के लिए बदलें नजरिया

– श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि जी म.

जगत के सभी प्राणी शान्तिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं। शान्ति का अर्थ हर एक के लिए अलग-अलग है। कुछ लोगों को शान्ति तब मिलती है, जब वे सुरक्षित महसूस करते हैं, बीमार नहीं होते हैं। बहुत लोगों के लिए बिना किसी डर का जीवन शान्तिपूर्ण होता है। कुछ लोगों को आंतरिक संतुष्टि में रहना शान्ति लगती है। कुछ लोग अपने चारों ओर के लोगों के साथ प्रेम-प्यार से रहने को ही शांति मानते हैं। जब हम विश्व स्तर पर शान्ति को देखते हैं तब हम इसे युद्ध, झगड़े और दंगे-फसाद का न होना मानते हैं।

पहले हमें बारीकी से यह विचार करना है कि शान्ति है क्या-शब्दकोश के अनुसार दुःख और कलह से निजात पाना ही शान्ति है और यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें सुकून और खामोशी होती है। इसी परिभाषा में इस प्रश्न का उत्तर भी छिपा हुआ है कि शान्ति को पाना इतना मुश्किल क्यों है। जीवन और दुःख साथ-साथ चलते हैं भले ही कोई गरीब हो या अमीर, राजा हो या किसान, सबकी जिंदगी में एक के बाद दूसरी समस्याएँ आती ही रहती हैं तो ऐसी अवस्था में हम शान्ति को कैसे पा सकते हैं? अगर हम अपनी बाहरी जिंदगी में शान्ति ढूंढते हैं, तब हमें कुछ ही क्षणों की शान्ति प्राप्त होती है। निश्चित रूप से हमारे जीवन में ऐसे मौके भी आते हैं, जब हम अपने नजदीकी लोगों के साथ आनंद विभोर होते हैं या कुछ ऐसे क्षण होते हैं, जब हम अपनी उपलब्धियों पर खुशी का इजहार करते हैं। अगर देखा जाए तो ऐसे क्षण कुछ समय के लिए ही होते हैं। यह स्वाभाविक है कि हमारी जिंदगी फिर दुःखों और परेशानियों से भर जाती है। ऐसे में हमें लगता है कि इस जीवन में हमेशा की शान्ति पाना असंभव है क्योंकि हम अपनी जिंदगी में बारी-बारी से सुख और दुःख के क्षणों से गुजरते हैं।

संत-महापुरुषों के अनुसार यह पक्का है कि हम सच्ची शान्ति इसी जिंदगी में पा सकते हैं। शान्ति हममें से प्रत्येक से शुरु होती है। सिर्फ हमें अपने नजरिये को बदलने की जरूरत है। आमतौर पर हम बाहरी दुनिया में शान्ति की तलाश करते हैं। हम इसको अपनी भौतिक वस्तुओं, सामाजिक दर्जे और रिश्ते-नातों में ढूंढते हैं पर इनमें से किसी के खो जाने पर हम आँसू बहाने लगते हैं, जिससे कि हमारे मन की शान्ति भंग हो जाती है। हमें यह समझना होगा कि हम इस संसार को नहीं बदल सकते लेकिन हम अपने जीवन में नया आयाम जोड़ सकते है, जिससे कि शान्ति प्राप्त कर सकें। सच्ची शान्ति तभी शुरु होती है जब हमारी आत्मा सभी प्रकार के दुःखों से मुक्त होने का अनुभव करती है। ध्यान-अभ्यास के जरिये हम इस शरीर से ऊपर उठते हैं और फिर हमारी आत्मा अंदर के मंडलों की यात्रा करती है। सतगुरु हमें भी इसका अनुभव प्रदान करते हैं।

जितना ज्यादा हम आंतरिक अनुभव प्राप्त करते हैं उतना ही ज्यादा हमें सुकून प्राप्त होता है। आंतरिक अनुभव मिलने पर हमारी आत्मा आनंद और खुशी का अनुभव करती है। आत्मा का ये अनुभव हर समय साथ रहता है जो कि उसे शान्ति और संतुष्टि से भर देता है।

हम न तो अपने सांसारिक जीवन को बदल सकते हैं और न ही इससे जुड़ी समस्याओं को खत्म कर सकते हैं पर ध्यान अभ्यास के जरिये इन समस्याओं को देखने का नजरिया बदल सकते हैं। तब हम इन्हें एक अलग नजरिये से देखते हैं और आस-पास के लोगों के लिए शान्ति का स्रोत बन जाते हैं। तब हमारे जीवन में शान्ति हमेशा के लिए आ जाती है, स्थिर हो जाती है।

Let Every Jain Count की ज़ूम बैठक सफलतापूर्वक संपन्न

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली एवं Let Every Jain Count द्वारा आयोजित जनगणना 2027 के द्वितीय चरण की महत्वपूर्ण ज़ूम बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई। लगभग 90 मिनट तक चली इस बैठक में जैन समाज की व्यापक सहभागिता सुनिश्चित करने तथा Self Enumeration एवं House Listing को लेकर विस्तृत रोडमैप तैयार किया गया।

बैठक में जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष विपुल जैन एवं उनकी टीम, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा संतोष जैन एवं उनकी टीम के साथ-साथ इस परियोजना के समन्वयक अंश जैन एवं प्रांतीय शाखाओं ने प्रमुख रूप से सहभागिता निभाई। वहीं Let Every Jain Count की ओर से सौम्या जैन ने जनगणना 2027 की कार्ययोजना एवं उद्देश्यों पर अत्यंत प्रभावशाली प्रस्तुति दी। उनके साथ शुभम जैन भी टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए जुड़े। बैठक में JISO के संस्थापक अध्यक्ष सुरेश पुनामिया ने भी विशेष रूप से भाग लिया तथा JISO की ओर से जनगणना 2027 के प्रारूप एवं रणनीति को प्रस्तुत किया। बैठक के दौरान वक्ताओं ने इस बात पर विशेष बल दिया कि आगामी जनगणना में जैन समाज की सटीक एवं व्यापक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सभी संगठनों, संस्थाओं एवं समाजजनों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही Self Enumeration और House Listing की प्रक्रिया को जन-जन तक पहुँचाने हेतु व्यापक जागरूकता अभियान चलाने पर सहमति बनी। यह बैठक जैन समाज की एकता, संगठनात्मक समन्वय एवं जनगणना 2027 को सफल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

प्रेषक : राजेश मेहरा

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

श्रीमती राजकुमार जैन का संथारापूर्वक देवलोकगमन

पीतमपुरा, दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजय जी जैन के आदरणीय मामाजी, श्री संघ पीतमपुरा के संरक्षक श्री मोहनलाल जैन जी पिनाना वाले की धर्मसहायिका, धर्मनिष्ठ एवं तपस्विनी श्रीमती राजकुमारी जैन का दिनांक 9 मई को प्रातः 6:15 बजे संथारापूर्वक शांतिपूर्वक देवलोकगमन हो गया। 2 मई से उनका सागारी संथारा प्रारंभ था तथा 6 मई को सुबह 11:38 बजे परिवारजनों एवं माताश्री के आग्रह पर संघ प्रमुखा श्री संयमप्रभा 'कमल' जी महाराज की सुशिष्याएँ, प्रवचन प्रभाविका श्री सुदक्षा जी महाराज आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में तिविहारी संथारा संपन्न हुआ। पूज्या माताश्री ने पूर्ण चेतनापूर्ण अवस्था में अत्यंत समता, श्रद्धा एवं आत्मबल के साथ संथारा स्वीकार किया। उनकी यह उच्च धर्मआराधना संयम, साधना एवं आत्मजागृति का प्रेरणादायी उदाहरण है। पूज्या माताश्री का संपूर्ण जीवन धर्म, संस्कार, सेवा, करुणा एवं पारिवारिक मूल्यों से ओतप्रोत रहा।

प्रेषक : विजय जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

जैन समाज का घटता जनसंख्या संतुलन : एक गंभीर चिंतन

– सुगालचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

भारत में जैन समाज की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या का मात्र 0.37% रह गई है। यह आंकड़ा केवल एक संख्या नहीं, बल्कि भविष्य के प्रति एक गंभीर संकेत है। कहा जाता है कि मुगल काल में पूरे भारतवर्ष में जैनों की संख्या लगभग तीन करोड़ के आस-पास थी। पिछले पाँच सौ वर्षों में विश्व की जनसंख्या कई गुना बढ़ गई, अनेक समाजों का विस्तार हुआ, लेकिन जैन समाज की जनसंख्या निरंतर सिकुड़ती चली गई। आखिर इसका कारण क्या है? क्या इस विषय पर समाज को गंभीर चिंतन और आत्ममंथन नहीं करना चाहिए?

जैन समाज सदैव से शिक्षित, संस्कारित, सम्पन्न और संगठित समाज माना जाता रहा है। व्यापार, उद्योग, शिक्षा, सेवा, दान और सामाजिक सहयोग के क्षेत्र में जैन समाज का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है। राष्ट्रहित में तन, मन और धन से सहयोग करने में भी यह समाज कभी पीछे नहीं रहा। देश में जब भी आवश्यकता पड़ी, जैन समाज ने खुलकर राष्ट्र सेवा की है। अहिंसा, करुणा, संयम और सद्भावना जैसे उच्च आदर्शों को जीवन में उतारने वाला यह समाज विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है।

जैन साधु-सतीवृन्द का जीवन भी अत्यंत प्रेरणादायी है। उनका जीवन चारित्र प्रधान, अनुशासित और त्यागमय होता है। वे समाज पर भार नहीं, बल्कि समाज के नैतिक मार्गदर्शक होते हैं। इतने उत्कृष्ट गुणों के बावजूद यदि समाज की जनसंख्या लगातार घट रही है, तो यह केवल आंकड़ों का विषय नहीं, बल्कि आने वाले समय की एक गंभीर चेतावनी है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित न रहे, बल्कि अपने अस्तित्व, संस्कृति और आने वाली पीढ़ियों के संरक्षण पर भी समान रूप से ध्यान दे। आधुनिकता और भौतिकता की दौड़ में यदि परिवार व्यवस्था, संस्कार और धार्मिक जुड़ाव कमजोर होंगे, तो उसका सीधा प्रभाव समाज की संख्या और शक्ति दोनों पर पड़ेगा। यह भी विचारणीय है कि आज हमारे बच्चे आधुनिक शिक्षा तो प्राप्त कर रहे हैं, पर क्या उन्हें अपने धर्म, दर्शन, इतिहास और परम्पराओं का पर्याप्त ज्ञान मिल पा रहा है? यदि नई पीढ़ी अपने मूल से कटती चली जाएगी, तो भविष्य में समाज का स्वरूप और अधिक सीमित हो सकता है। केवल मंदिर निर्माण, आयोजन और आर्थिक सम्पन्नता ही समाज की शक्ति का मापदंड नहीं हो सकते, वास्तविक शक्ति जीवंत और जागरूक पीढ़ी होती है।

समय आ गया है कि समाज इस विषय पर खुलकर चर्चा करे। केवल चिंता करने से समाधान नहीं निकलेगा, बल्कि सकारात्मक सोच के साथ ठोस प्रयास करने होंगे। परिवार, संस्कार, धार्मिक शिक्षा, युवा जागरण और सामाजिक एकता पर विशेष ध्यान देना होगा। यदि आज भी हम नहीं चेते, तो आने वाले वर्षों में स्थिति और अधिक चिंताजनक हो सकती है।

यह चिंतन किसी आलोचना के लिए नहीं, बल्कि समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए है। आवश्यकता है जागरूकता की, आत्ममंथन की और सामूहिक प्रयास की।

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

स्वास्थ्य समाचार-शुभ मंगलकामना...

प्रवर्तक श्री राजेंद्र मुनि जी म. के दोनों घुटनों की शल्य चिकित्सा संपन्न

उदयपुर (राजस्थान) : 14 मई गुरु पुष्कर-देवेन्द्र सुशिष्य श्रमण संघ प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज का डॉ. सौरभ गोयल अहमदाबाद वालों के द्वारा अरावली हॉस्पिटल उदयपुर में दोनों घुटनों का रिप्लेसमेंट ऑपरेशन संपन्न हुआ। निवेदन है कि णमोकार महामंत्र का जाप करें एवं जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से गुरुदेवश्री जी के उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना।

प्रेषक : रोशन लाल जैन-अध्यक्ष, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उदयपुर

महाराष्ट्र प्रवर्तनी पू. श्री प्रतिभाकंवर जी म. का घुटनों का ऑपरेशन संपन्न

संभाजीनगर (महाराष्ट्र) : श्रमण संघीय प्रवर्तनी कोटा, संघ प्रमुखा दक्षिण सिंहणी परम पूज्य महासाध्वी पू. श्री प्रतिभाकंवर जी म. को महावीर हॉस्पिटल, कर्नाट, छ: संभाजीनगर में घुटनों की शल्य चिकित्सा के लिए (Knee Transplant) दाखिल किया गया था, जहाँ उनका ऑपरेशन संपन्न हुआ। आप सभी नवकार महामंत्र का जाप कर पूज्य प्रवर्तनीश्री जी के स्वास्थ्य के लिए मंगल कामना करें। प्रेषक : वर्धमान गणेश प्रतिष्ठान

मंगलमय विहार यात्रा...

उपाध्याय श्री प्रवीण ऋषि जी म. की पदविहार यात्रा निरंतर जारी

कड़ा (महाराष्ट्र) : दीक्षा महोत्सव की मंगल पूर्णाहुति के पश्चात आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज के प्रमुख शिष्य उपाध्याय गुरुदेव पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. आदि ठाणा का मंगल विहार महाराष्ट्र के विभिन्न नगरों में निरंतर चल रहा है। संभावित विहार यात्रा कड़ा एवं जामखेड़ रहेंगे।

फाइल चित्र

संथारा विशेषज्ञ गुरुदेव श्री धर्म मुनि जी म. पहुंचे गन्नौर मंडी हरियाणा

गन्नौर (हरियाणा) : घोर तपस्वी गुरुदेव श्री रोशनलाल जी महाराज के सुशिष्य दृढ़ संयमी, लोहपुरुष, संथारा विशेषज्ञ गुरुदेव श्री धर्ममुनि जी म.सा. ठाणे 4 से श्री एस. एस. जैन सभा श्री जैन स्थानक गन्नौर मंडी में सुखसाता पूर्वक विराजमान है। धन्य है हम सबके आराध्य श्री धर्ममुनि जी महाराज जो 84 वर्ष की उम्र होते हुए इतनी भीषण गर्मी में 9-9 किलोमीटर के विहार कर रहें है। प्रेषक : प्रधान मुकेश जैन

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा रोहिणी में नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन नेत्र जाँच व एक्यूपंक्चर द्वारा रोगियों का हुआ नि:शुल्क ईलाज

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा जनमानस को आरोग्य प्रदान करने के उद्देश्य को समर्पित लक्ष्य के अन्तर्गत 9 मई 2026 को प्रात: 9:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक अहिंसा विहार, सैक्टर-9, रोहिणी परिसर में नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का भव्य आयोजन उत्साहपूर्ण वातावरण के बीच किया गया।

इस स्वास्थ्य जाँच शिविर में जीवो हॉस्पिटल, रोहिणी के अनुभवी डाक्टर्स की देख-रेख में लगभग 150 नेत्र रोगियों की जाँच की गई। उल्लेखनीय है कि मोतियाबिन्द रोग से ग्रस्त रोगियों का जीवो हॉस्पिटल, रोहिणी मे नि:शुल्क सर्जरी कराई जाएगी इसके अलावा इस शिविर में घुटनों, जाम हो चुके कंधों, सर्वाइकल, पीठ के निचले हिस्से, माइग्रेन आदि जैसे दर्द का एक्युपंक्चर पद्धति से लगभग 50 लोगों को दर्द से राहत देने का उपचार डॉ. शिल्पा जैन द्वारा किया गया। लगभग 60 से 70 लोगों के मधुमेह व थाइरायड रोग की जाँच भी की गई। इस शिविर में किसी रोग का टेस्ट कराए जाने पर 90 प्रतिशत छूट की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई।

इस शिविर में जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन, ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश कुमार जैन, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश कार्याध्यक्ष श्री राजेश कुमार जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अनिल कुमार जैन, महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन, कार्यकारी महामंत्री श्री सन्दीप जैन 'सोनू', वरिष्ठ मंत्री श्री दीपक जैन (लक्ष्मी नगर), कानूनी सलाहकार मंत्री श्री संजीव जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री करतार सिंह जैन व श्री राजकुमार जैन 'चिड़ाना', दिल्ली प्रान्तीय जीव दया योजना अध्यक्ष श्री सुधीर ओसवाल जैन, अहिंसा विहार श्रीसंघ अध्यक्ष श्री सुभाष पारख जैन, उप-प्रधान श्री राकेश जैन, महामंत्री श्री अमित जैन 'बंकु' एवं अन्य क्षेत्रिय बन्धुओं ने इस शिविर में पधारकर अपना सहयोग प्रदान किया।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

उल्लास और आस्था के साथ अष्ट दिवसीय 'समकित संस्कार शिविर' का भव्य समापन

बेंगलुरु (कर्नाटक) : स्थानीय बिन्नीपेट स्थित श्री गुरु ज्येष्ठ पुष्कर जैन आराधना केन्द्र में 'बैंगलोर चातुर्मास समिति 2026' के तत्वावधान में आयोजित अष्ट दिवसीय ऐतिहासिक और भव्य आवासीय 'समकित संस्कार शिविर' का अत्यंत उल्लास, आध्यात्मिक ऊर्जा और भावभीनी विदाई के साथ गरिमामयी समापन हुआ। आठ दिनों तक चले ज्ञान और संस्कारों के इस महाकुंभ में देशभर से आए सैकड़ों बच्चों ने जो जीवन जीने की कला सीखी, उसकी दिव्य आभा समापन समारोह में हर बच्चे के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। यह शिविर केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि बच्चों के भीतर सोए हुए उत्कृष्ट संस्कारों को जगाने वाला एक मील का पत्थर साबित हुआ।

इस अवसर पर महासाध्वी श्री सत्यप्रभा जी म.सा. एवं अनेकों साधु-साध्वी भगवंतों का भी पावन सान्निध्य मिला। आठ दिनों तक चले इस अविस्मरणीय शिविर के समापन पर बच्चों की आँखों में जहाँ एक ओर गुरु भगवंतों से बिछड़ने के भावपूर्ण आंसू थे, वहीं दूसरी ओर एक नया और संस्कारी जीवन शुरु करने की अपार चमक भी थी।

प्रेषक : बैंगलोर चातुर्मास समिति

सूरत में मेवाड़ संघ की स्थापना

सूरत (गुजरात) : दिनांक 3 मई 2026, रविवार को अनंत पुण्य के उदय से, धर्म की पावन छाया में, मेवाड़ संघ शिरोमणि, पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री अंबालाल जी म. के दिव्य आशीर्वाद से गुरु सौभाग्य-मदन, गुरुणी प्रेम की प्रेरणा से श्रमण संघ के आचार्य भगवन्त डॉ. शिवमुनि जी म. के आशीर्वाद से सूरत महानगर पालिका के 13 संघों के प्रतिनिधियों ने मिलकर एकता, समर्पण और गुरु भक्ति की अनुपम मिसाल प्रस्तुत करते हुए, गुरु अम्बेश के पावन सिद्धांतों को हृदय में धारण कर, एक विशाल, संगठित एवं प्रेरणादायक 'मेवाड़ संघ सूरत' की स्थापना कर बहुमूल्य योगदान का संदेश मिला।

यह केवल एक संगठन नहीं, बल्कि धर्म, संस्कार, सेवा और समर्पण का सजीव संगम है, जो आने वाले समय में समाज को नई दिशा और शक्ति प्रदान करेगा। इस ऐतिहासिक एवं पुण्य अवसर पर तेरहों संघों के अनेक गणमान्य प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। जिससे यह आयोजन और भी दिव्य एवं स्मरणीय बन गया। साथ ही, परम पूज्य गुरुणी मैया विजयलता जी म. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य एवं मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त हुआ। जिससे यह शुभ कार्य और भी सिद्ध, सफल एवं कल्याणकारी बना।

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन

अभय जैन

महामंत्री

अतुल जैन

कोषाध्यक्ष

अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से नि:स्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में नि:शुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

राष्ट्रसंत श्री मणिभद्र मुनि जी का कवर्धा में मंगल प्रवेश

कवर्धा (छत्तीसगढ़) : राष्ट्रसंत, मानव मिलन के संस्थापक, नेपाल केसरी पूज्य गुरुदेव मणिभद्र मुनि जी म. का अपने साधु एवं साध्वी समुदाय के साथ कवर्धा में हर्ष, उल्लास एवं भक्तिमय वातावरण के मध्य मंगल प्रवेश हुआ। श्रद्धालुओं ने भक्ति एवं उत्साहपूर्वक गुरुदेव की आगवानी कर दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त किया। नेपाल से विहार करते हुए बनारस मार्ग से जबलपुर में विराजमान रहने के उपरांत अब गुरुदेव अपने साधु-साध्वी समुदाय सहित दुर्ग में आगामी जुलाई माह में होने वाले चातुर्मास हेतु पधार रहे हैं। साधु एवं साध्वी समुदाय चतुर्विध संघ के साथ धर्म आराधना एवं चातुर्मास हेतु दुर्ग पधार रहे हैं, जिससे संपूर्ण क्षेत्र में धर्ममय एवं आध्यात्मिक वातावरण निर्मित होगा। प्रेषक : नवीन संचेती जैन

हरियाणा ज्ञान प्रकाश योजना के द्वारा वृद्धाश्रम में खाद्य सामग्री वितरण

सोनीपत (हरियाणा) : रविवार, दिनांकः 10 मई 2026, को मदर्स-डे के शुभ अवसर पर हरियाणा ज्ञान प्रकाश योजना की प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती शशि जैन के अलावा श्रीमती सुदेश जैन, श्रीमती ज्योति जैन, श्रीमती मोना जैन एवं श्रीमती लक्ष्मी जैन ने सभी के साथ मिलकर वृद्धाश्रम जाकर वहाँ के बुजुर्गों को फल, कोल्ड ड्रिंक, बिस्किट आदि वितरित किए तथा उनके साथ कुछ स्नेहपूर्ण एवं यादगार पल व्यतीत किए। इस अवसर पर सभी ने बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त कर सेवा एवं सम्मान का संदेश दिया। प्रेषक : शशि जैन

तमिलनाडु महिला शाखा ने मदर्स-डे के अवसर पर सेवा, संवेदना और समर्पण का उदाहरण प्रस्तुत किया

चेन्नई (तमिलनाडु) : मदर्स-डे के पावन अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा, तमिलनाडु की प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संगीता बाठिया जैन के नेतृत्व में उनकी समर्पित टीम द्वारा Madras Association for the Blind में वृद्ध दृष्टिहीनजनों के बीच सेवा कार्य सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर भोजन वितरण के साथ-साथ दैनिक आवश्यकता की अन्य उपयोगी सामग्री भी श्रद्धाभाव एवं आत्मीयता के साथ प्रदान की गई। इस प्रेरणादायी सेवा कार्य के माध्यम से संस्था ने मातृभाव, करुणा, संवेदनशीलता एवं समाज सेवा का सुंदर संदेश समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में Squadron Leader Nupur Jain (Indian Air Force) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। महिला शाखा की सदस्यों द्वारा उनका आत्मीय स्वागत एवं सम्मान किया गया। अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में उन्होंने नारी शक्ति, सेवा भावना और सामाजिक उत्तरदायित्व पर प्रकाश डालते हुए इस सेवा कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा ऐसे आयोजनों को समाज की वास्तविक आवश्यकता बताया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा की पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने आत्मीयता, सौहार्द एवं समर्पण के साथ सहभागिता निभाते हुए कार्यक्रम को पूर्णतः सफल एवं सार्थक बनाया। इस सेवा अवसर पर श्रीमती सविता पुंगलिया, श्रीमती संतोष कोठारी सहित अनेक पदाधिकारी सदस्य उपस्थित रहे। प्रेषक : संगीता बाठिया जैन

जैन कॉन्फ्रेंस उत्तर प्रदेश युवा शाखा द्वारा महत्वपूर्ण कार्य का प्रारंभ

बड़ौत (उत्तर प्रदेश) : उत्तर प्रदेश/उत्तराखंड की जैन स्थानकों, विहार धामों एवं विहार व्यवस्था की सम्पूर्ण जानकारी सहित स्थानकों में मानचित्र लगाने के कार्य का शुभारंभ धर्मनगरी बड़ौत के जैन स्थानक मंडी से किया गया। इस महत्वपूर्ण कार्य का शुभारंभ श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन के द्वारा जैन स्थानक मंडी के महामंत्री श्री संजय जैन की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

उन्होंने इस कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस मानचित्र के जैन स्थानक में स्थाई रूप से लग जाने से यहाँ पर पधारने वाले संतों के विचरण में अत्यंत सुविधा प्राप्त होगी तथा विहार व्यवस्था अधिक सुव्यवस्थित बन सकेगी। इस अवसर पर उन्होंने श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की उत्तर प्रदेश शाखा के युवा शाखा अध्यक्ष श्री पुनीत जैन एवं श्री श्रेयांश जैन के प्रयासों की विशेष अनुमोदना की।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि इसी प्रकार सभी राज्यों में यह व्यवस्था लागू हो जाए तो संतों के विचरण के दौरान देशभर में अत्यधिक लाभ एवं सुविधा प्राप्त होगी।

ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को किया गया पुरस्कृत

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) : श्रमण संघीय युवाचार्य पू. श्री महेंद्रऋषि जी म. एवं मेवाड़ भास्कर उप-प्रवर्तक पू. श्री कोमल मुनि जी म. के सान्निध्य में नवकार दिवस पर विरासत एवं विकास संस्थान चित्तौड़गढ़ द्वारा आयोजित द्वारा ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ रहे प्रतिभागियों को प्रशंसित पत्र एवं नवकार मंत्र की तस्वीर स्मृति चिन्ह के रूप में देकर सम्मानित किया गया। इस ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ रही नीता डांगी, राखी कोठारी, मधु सेठिया को इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष बंसतीलाल मेहता, कोषाध्यक्ष पवन पटवारी, श्रमण संघ संरक्षक सीएम रांका, श्री जैन दिवाकर महिला परिषद की अध्यक्षा संगीता चीपड आदि के सान्निध्य में सम्मानित किया गया।

इसी क्रम में श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की। सांत्वना पुरस्कारों में अनीता भाणावत उदयपुर, रानी मनीष मेहता डूंगला, अलका सिंघवी भीलवाड़ा, मीना पटवारी चित्तौड़गढ़, केसरीमल भडकत्या चित्तौड़गढ़, कमलेश सामर उदयपुर, हेमंत संचेती बेंगलुरु, प्रिया मादरेचा अहमदाबाद रहें। इस अवसर पर महिला शाखा प्रांतीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा खोखावत, महामंत्री शिल्पा नाहर, कोषाध्यक्ष अंगूरबाला भडकत्या आदि मौजूद रहे। प्रेषक : पवन पटवारी

डॉ. उत्तमचन्द गोठी माम्बलम संघ के अध्यक्ष निर्वाचित

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री एस.एस. जैन संघ माम्बलम-टी. नगर की वार्षिक आम सभा रविवार, दिनांक 10 मई को बर्किट रोड स्थित जैन स्थानक में आयोजित हुई। आम सभा ने डॉ. एम. उत्तमचन्द गोठी को पुनः एक बार सर्वसम्मति से संघ अध्यक्ष चुना। साथ ही इंदरचन्द लोढ़ा को उपाध्यक्ष, महेन्द्र गादिया को मंत्री, राजमल नाहटा को कोषाध्यक्ष विमल डुंगरवाल को सह-कोषाध्यक्ष, सुशील एम. धोका व विनोद गादिया को सहमंत्री चुना।

जैन कॉन्फ्रेंस उत्तर प्रदेश महिला शाखा द्वारा जरूरतमंद महिलाओं को राशन वितरण

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड शाखा की प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती नीरू जैन, प्रांतीय महिला महामंत्री श्रीमती रूबी जैन और प्रांतीय महिला कोषाध्यक्ष श्रीमती रुचि जैन के निर्देशन में और समाज के ही अन्य लोगों के सहयोग से आज महिला आश्रम में सभी महिलाओं को राशन का सामान प्रदान किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से श्रीमती नीरू जैन, श्री कीमती लाल जैन, श्रीमती अचला जैन, श्रीमती एनी जैन, श्रीमती रुचिका जैन, श्रीमती सिल्की जैन, श्रीमती मीतू जैन, श्री प्रमोद जैन, श्री कुणाल जैन आदि मौजूद रहे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 15-05-2026
Date of Posting : 21/22-05-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ❊ वर्ष : 70 ❊ अंक : 11
पृष्ठ : 8 ❊ माह : मई ❊ सप्ताह : 15 से 21
मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

पाकिस्तान में स्थानकवासी जैन परंपरा की भूली-बिसरी विरासतें...

पाकिस्तान के पंजाब में स्थानकवासी जैन समाज की विरासत : इतिहास, विस्थापन और संरक्षण की नई पहल

वर्तमान पाकिस्तान का पंजाब क्षेत्र, स्वतंत्रता-पूर्व काल में स्थानकवासी जैन समाज की सक्रियता, समृद्धि और सांस्कृतिक चेतना का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। भावड़ा वंश में जन्मे ओसवाल जैन समाज के स्थानकवासी जैन परिवारों ने इस भू-भाग के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और धार्मिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया।

पाकिस्तान के वर्तमान पंजाब तथा उससे जुड़े क्षेत्रों के अनेक नगर-सियालकोट, रावलपिंडी, गुजरांवाला, लाहौर, डेरा इस्माइल खान, कराची अन्य अनेक कस्बों में स्थानकवासी जैन समाज ने न केवल अपने धार्मिक केंद्र स्थापित किए, बल्कि शिक्षा, समाज सेवा और सामुदायिक संगठन के अनेक अनुकरणीय संस्थान भी विकसित किए।

इन नगरों में निर्मित जैन स्थानक केवल धार्मिक उपासना के केंद्र नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक अनुशासन, नैतिकता, व्यापारिक विश्वास और सामुदायिक एकता के जीवंत प्रतीक थे। स्थानकवासी साधु-साध्वियों के चातुर्मास, प्रवचन, स्वाध्याय और आध्यात्मिक मार्गदर्शन ने इन क्षेत्रों में जैन संस्कृति को स्थायी आधार प्रदान किया।

भावड़ा ओसवाल जैन परिवारों ने व्यापार, बैंकिंग, अनाज मंडियों, वस्त्र व्यवसाय और वित्तीय गतिविधियों के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके द्वारा स्थापित विद्यालय, छात्रावास, पुस्तकालय, धर्मशालाएँ और सामाजिक संस्थाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि जैन समाज केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व की दृष्टि से भी अत्यंत अग्रणी था।

सन् 1947 के विभाजन ने इस समृद्ध परंपरा को गहरा आघात पहुँचाया। परिस्थितियों के दबाव में स्थानकवासी जैन परिवारों को अपने पैतृक घर, व्यापारिक प्रतिष्ठान, धार्मिक स्थल और सामाजिक संस्थाएँ छोड़कर भारत की ओर पलायन करना पड़ा। यह केवल जनसंख्या का विस्थापन नहीं था, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक विरासत का भूगोल से बिछुड़ जाना भी था।

आज पाकिस्तान के विभिन्न नगरों में स्थानकवासी जैन समाज द्वारा निर्मित अनेक स्थानक, धर्मशालाएँ, विद्यालय भवन और सामाजिक संस्थाओं के अवशेष अब भी विद्यमान हैं, किन्तु अधिकांश समय, उपेक्षा और संरक्षण के अभाव में जर्जर अवस्था में पहुँच चुके हैं। फिर भी आशा का एक नया अध्याय सामने आया है। जैन विरासत संरक्षण से जुड़े हमारे पिछले 20 वर्षों के प्रयासों, जैन हेरिटेज फाउंडेशन तथा सुप्रीम कोर्ट ऑफ पाकिस्तान के निर्देशों के बाद अल्पसंख्यक धार्मिक धरोहरों के संरक्षण की दिशा में जो पहल प्रारम्भ हुई है, उसमें जैन स्थलों के सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण और पुनरुद्धार की संभावनाएँ भी दिखाई देने लगी हैं। प्रारंभिक तौर पर लाहौर के जैन स्थानक का संरक्षण का काम प्रारंभ होने वाला है, जिसके लिए पाकिस्तान सरकार ने एक अच्छी खासी रकम इस महत्वपूर्ण काम के लिए जारी की है।

यह विरासत केवल स्थापत्य संरचनाओं का इतिहास नहीं, बल्कि अहिंसा, अपरिग्रह, व्यापारिक नैतिकता और सामाजिक समरसता की उस परंपरा का दस्तावेज है, जिसने कभी पंजाब, सिंध और सीमांत क्षेत्रों के सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया था।

"पाकिस्तान की भूली-बिसरी स्थानकवासी जैन परंपरा" विषय पर प्रकाशित इस श्रृंखला के अंतर्गत अब तक उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों, स्थानीय अभिलेखों, मौखिक परंपराओं और सीमित दस्तावेजी प्रमाणों के आधार पर विभिन्न केंद्रों का परिचय पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

इस अंक के साथ फिलहाल इस श्रृंखला का समापन किया जा रहा है, क्योंकि पाकिस्तान में स्थित अन्य स्थानकवासी जैन केंद्रों के संबंध में वर्तमान समय में पर्याप्त एवं प्रामाणिक सामग्री सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हो पा रही है, जो शोधपरक लेखन की अपेक्षित सामग्री के लिए पर्याप्त नहीं है।

किन्तु इतिहास की खोज कभी समाप्त नहीं होती। भविष्य में यदि नए अभिलेख, दुर्लभ छायाचित्र, स्थानीय विवरण, पारिवारिक दस्तावेज अथवा अन्य महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाश में आती है, तो निश्चय ही इस श्रृंखला के शेष अध्याय आगामी अंकों में पुनः प्रकाशित किए जाएँगे। यही इतिहास के प्रति हमारी शोध-साधना और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व का सतत् संकल्प है।

(प्रस्तुति - डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत)

जैन गौरव — लेफ्टिनेंट जनरल हर प्रसाद जगत प्रसाद जैन

लेफ्टिनेंट जनरल हर प्रसाद जगत प्रसाद जैन का जन्म 1917 में इलाहाबाद में हुआ था। आपके पिता सी.आई.ई. 1934 में डिप्टी ऑडिटर जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुये थे। जम्मू और कश्मीर राज्य के वित्तीय सलाहकार रहे। वह दिल्ली की बहुत सम्मानित सामाजिक हस्ती थी। लेफ्टिनेंट जनरल हर प्रसाद ने भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून से योग्यता प्राप्त की और 1939 में भारतीय सेना में द्वितीय लेफ्टिनेंट के रूप में शामिल हुये। वह द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मध्यपूर्व में सक्रिय सेवा पर थे। उन्होंने खुद को उच्च योग्यता के प्रशासक के रूप में प्रतिष्ठित किया। 1969 में वह सेना के उप-प्रमुख के उच्च पद तक पहुँचे। 1971 में बांग्लादेश संचालन के दौरान मेधावी सेवाओं को प्रदान करने के लिए उन्हें परम विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया। 1973 में सेवानिवृत्त होने पर वह लेफ्टिनेंट जनरल थे। उसके बाद नई दिल्ली में बस गये। 23 जून 1980 को उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई।

जैन जनगणना कैंप का आयोजन

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन के मार्गदर्शन में एवं श्री एस.एस. जैन सभा सेक्टर-3 के तत्वावधान में जनगणना का एक कैंप लगाया गया, जिसमें 70 के लगभग जैन परिवारों के फॉर्म भरे गए। इस अवसर पर संघ के प्रधान श्री गंगेश जैन, महामंत्री श्री नरेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष श्री सतीश जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री नरेश जी, युवा अध्यक्ष भाई विपुल जैन, उपाध्यक्ष श्री दिनेश जैन, हरियाणा परिवार के संस्थापक भाई राजेंद्र बब्बल जी, श्री नरेश जी, श्री सुरेश जी एवं सह-कोषाध्यक्ष श्रीमती कौशल्या जैन सहित अनेक पदाधिकारीगण पधारे। प्रेषक : संतोष जैन

शीतल स्वाध्याय भवन में आत्म-ध्यान शिविर का आयोजन

भीलवाड़ा (राजस्थान) : महासाध्वी गुरुणी पू. श्री यशकंवर जी म.सा. के पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर काशीपुरी स्थित शीतल स्वाध्याय भवन में आत्म-ध्यान शिविर का आयोजन हुआ, जो साध्वी ज्ञानकंवर म.सा., साध्वी प्रतिभाकंवर जी म.सा., साध्वी पुष्पा जी म.सा. एवं साध्वी सुप्रभा म.सा. के सान्निध्य में संपन्न हुआ। शिविर में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर साधना और आत्मचिंतन का लाभ लिया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि भागदौड़ भरे जीवन में आत्म-ध्यान मानसिक शांति और सकारात्मक दिशा प्रदान करता है तथा गुरुणी यशकंवर जी म.सा. के आदर्श सेवा, संयम और साधना की प्रेरणा देते हैं। साध्वी ज्ञानकंवर जी म.सा. ने आत्म साक्षात्कार को जीवन का लक्ष्य बताते हुए नियमित साधना व स्वाध्याय पर जोर दिया। कार्यक्रम में विभिन्न गणमान्यजन उपस्थित रहे तथा अंत में शांतिपाठ के साथ समापन हुआ। प्रेषक : लाड़ मेहता जैन

जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान महिला शाखा आत्म-ध्यान योजना द्वारा युवाचार्यश्री जी के सानिध्य में आत्म ध्यान शिविर का आयोजन

भीलवाड़ा (राजस्थान) : श्रमण संघीय आचार्य प्रवर ध्यान योगी पूज्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज, परम पूज्य युवाचार्य प्रवर श्री महेंद्रऋषि जी महाराज के पावन आशीष से आत्म-ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 120 महिलाओं व पुरुषों ने भाग लिया। इसमें राष्ट्रीय आत्म-ध्यान योजना अध्यक्ष श्रीमती लाड़ मेहता जैन के प्रेरणा से राजस्थान प्रांतीय आत्म-ध्यान योजना अध्यक्ष नीलम तरावत जैन, मंत्री रेखा डांगी जैन, उपाध्यक्ष शांता वडाला जैन, संगठन मंत्री भावना कोठारी जैन, प्रचार-प्रसार मंत्री निर्मला नाहर जैन, कार्यकारिणी सदस्या रेखा जारोली, राजस्थान प्रांतीय कोषाध्यक्षा श्रीमती अंगूरबाला भड़कतिया जैन, उपाध्यक्षा प्रमिला वडाला, मंत्री सरोज नाहर जैन, सदस्य दिलखुश खेरोदिया जैन, वीरेंद्र पगारिया जैन और अन्य कई जैन कांफ्रेंस के कार्यकारिणी सदस्य मौजूद थे। इस कार्यक्रम में श्रीमती अंगूरबाला भड़कतिया जैन एवं पवन पटवारी का सहयोग बहुत रहा। युवाचार्यश्री जी ने ध्यान शिविर के बारे में बहुत अच्छी तरह समझाया और एक घंटे तक ध्यान कराया। सैंती संघ के सभी पदाधिकारी एवं अध्यक्ष श्री अनिल पोखरना जैन, मोखम नाहर जैन, मुकेश कोठारी जैन का सहयोग रहा।

प्रेषक : लाड मेहता जैन

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने
सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूं का आटा
मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा
भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक
और नोबल पुरस्कार विजेताओं की
स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज
प्रेस्टीज प्रोटेक लिमिटेड
प्रेस्टीज फीड मिल्स
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ❊ सम्पर्क : 90197 31906